

सीआइएमपी में अब तक 460 स्टूडेंट्स बने मैनेजमेंट ग्रेजुएट, इनमें 80% बिहारी



पटना. चंद्रगुप्त प्रबंध संस्थान अपनी स्थापना के 12 साल पूरे कर चुका है। यहां पिछले 12 सालों में अब तक 460 स्टूडेंट्स मैनेजमेंट ग्रेजुएट बने हैं जिनमें 80 फीसदी बिहार के बच्चे हैं। इनमें 50 फीसदी एससी, एसटी और ओबीसी वर्ग के स्टूडेंट्स हैं और



कुल स्टूडेंट्स में 40 फीसदी से ज्यादा लड़कियां हैं। ये सभी आज देश विदेश में अपनी प्रतिभा से बिहार की तस्वीर बदल रहे हैं। ये बातें सीआइएमपी के निदेशक वी मुकुंदा दास ने प्रभात खबर के रविशंकर उपाध्याय से विशेष बातचीत में साझा की।

■ **चंद्रगुप्त प्रबंध संस्थान (सीआइएमपी) के 12 साल पूरे होने पर बोले निदेशक वी मुकुंदा दास**

■ **पांच नेशनल और इंटरनेशनल अवार्ड जीत चुका है संस्थान, विश्वभर के जर्नल्स में छप चुके हैं शोधपत्र**

■ प्र. पिछले 12 सालों में संस्थान की क्या उपलब्धियां रहीं?

यह ऐसा संस्थान है जो ब्रांड बिहार को रिप्रेजेंट करता है। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के दिशा निर्देश में हम अभी तक लगभग 500 मैनेजमेंट ग्रेजुएट को तैयार कर चुके हैं। इनमें से ज्यादातर ऐसे हैं जो मध्य और निम्न मध्य वर्ग से आते हैं। डिग्री प्राप्त करने के बाद सभी नौकरी कर रहे हैं और अपने परिवार के साथ बिहार की तस्वीर बदल रहे हैं।

■ प्र. संस्थान को यहां तक लाने के लिए आपने क्या प्रयास किये?

हमने यहां आईआईटी, आईआइएम, एक्सप्यालआरआइ, आईआरएमए से फैकल्टी लायी। सभी स्टूडेंट्स को अनुशासन का पार्बंद बनाया और उन्हें बिहार को रिप्रेजेंट करने की तालीम दी है। हमारी लाइब्रेरी में

20 हजार किताबें, 50 जर्नल्स, 21 न्यूजपेपर, 2000 हार्डेपेर हैं। यह पूरी तरह इ-लाइब्रेरी है जिसे कभी भी स्टूडेंट्स इस्तेमाल करते हैं। यही कारण है कि भारत की सभी प्रमुख कंपनियां यहां से फ्रेश ग्रेजुएट को ले जाने के लिए लाइन लगायी रहती हैं।

■ पढ़ाई के इतर संस्थान ने क्या अलहदा प्रयास किये हैं?

2008-09 में हमारे यहां दैनिक भत्ता पर कुछ सफाई कर्मी रखे गये

थे, जिन्होंने अपने बच्चों को पढ़ाई को लेकर समस्या एवं उसे पूरा करने में अपने आप को अक्षम बताया था। तभी मेरे दिमाग में आया कि बच्चों ने हम उनके बच्चों को शाम में अपने खाली समय में से 1-2 घंटा निकाल कर उनकी पढ़ाई में मदद करें। मैंने संस्थान के छात्रों से अन्योपचारिक वार्ता के दौरान यह बात रखी, जिसमें कई छात्र-छात्राओं ने अपनी रुचि दिखायी और कुछ ने तो औपचारिक तौर पर अपने खाली समय में उन्हें पढ़ाने के लिए अपने आप को स्वयंसेवक भी घोषित कर दिया। धीरे-धीरे उन सफाई कर्मियों और उनके आस-पड़ोस के बच्चे भी इसमें रुचि दिखाने लगे और इस मुहिम में शामिल होते गये। आज बच्चियां प्रतिभाशाली बन चुकी हैं।

यही नहीं हमने स्टूडेंट्स गाइडेंस सेंटर की भी स्थापना की है, जिसमें एससी और एसटी स्टूडेंट्स के लिए फ्री में कोविंग दी जाती है। एक और योजना है जिसमें हम एक गांव को गोद लेकर उसे समृद्ध करते हैं। सीतामढ़ी के तुंबा गांव के बाद हम पटना जिले के एक गांव को गोद लेने की तैयारी कर रहे हैं। इसके साथ ही हम स्टार्टअप को भी अपने इन्क्यूबेशन सेंटर के माध्यम से खड़ा कर रहे हैं।

■ नये कैंपस में आने से पहले

सीआइएमपी हिंदी भवन में संचालित होता था। अब मीठापुर में आने के बाद क्या-क्या बदलाव आये हैं?

फर्क सिर्फ इतना है कि वहां वैसे बच्चों की संख्या, स्थान छोटा होने के कारण कम हुआ करती थी, अब अपेक्षाकृत ज्यादा बच्चे आते हैं। और हम इसमें और ज्यादा बच्चों को ले सकते हैं। दायरा बढ़ गया है। हम कहेंगे कि सभी संस्थानों की समाज के प्रति कुछ जिम्मेदारी बनती है। अतः उन्हें अपने मूल कार्यों के अलावा थोड़ा समय एवं संसाधन समाज की बेहतरी में भी लगाना चाहिए। यह ध्यान रहे कि हरेक का छोटा-छोटा योगदान भी सामाजिक परिवर्तन में बड़ी भूमिका निभा सकता है।

■ भविष्य में इसको लेकर और भी कुछ योजनाएं हैं?

भविष्य में हम संस्थान की समाज के लिए लाभकारी योजना की संख्या बढ़ाने, उसमें अति पिछड़ा एवं गरीब परिवार के बच्चों पर ध्यान केंद्रित करना चाहते हैं, ताकि समाज की आखिरी पंक्ति के बच्चे भी प्रगति में शामिल हो सकें। हमारा बच्चों को एकमात्र संदेश यही है कि खुद का विकास करो और कम-से-कम थोड़ा-सा बिहार के लिए भी काम करो।